317hi21

21

जनमत तथा दबाव समूह

लोगों के विचार, उनकी रुचियाँ एवं आकांक्षाएँ लोकतांत्रिक शासन प्रणाली की रीढ़ होती हैं। कुछ ऐसे समूह व संस्थाएँ होती हैं, जो अपने कुछ विशेष हितों को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा बनाई जाने वाली नीतियों और उसके द्वारा लिए जाने वाले निर्णयों को प्रभावित करने का प्रयास करती हैं। इस प्रकार के समूह व संघों को दबाव समूहों के नाम से जाना जाता है। जनता का प्रतिनिधित्व करने वाली सरकार जनता के द्वारा व्यक्त किए गए जनमत के आधार पर प्रशासन चलाती है। वास्तव में लोकतंत्र को शक्ति जनता से ही प्राप्त होती है। जनहित से जुड़े मुद्दों पर यह लोगों के विचार का स्वागत करती है। वास्तव में कोई भी शासन प्रणाली, चाहे वह लोकतांत्रिक हो या कोई और जनमत या दबाव समूहों को नजरअंदाज नहीं कर सकती। प्रत्येक सरकार जनता की भावनाओं का सम्मान करती है। वह प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से उनसे जुड़े विभिन्न मुद्दों पर उनकी प्रतिक्रिया जानना चाहती है। प्रत्येक शासन प्रणाली में जनमत व दबाव समूह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस अध्याय में हम जनमत एवं दबाव समूहों से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विचार करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- जनमत का अर्थ एवं उसकी विशेषताओं की व्याख्या कर सकेंगे;
- जनमत की भूमिका व महत्व को पहचान सकेंगे;
- जनमत के निर्माण में सहायक ऐजेन्सियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- स्वस्थ जनमत के निर्माण में आने वाली बाधाओं को पहचानेंगे;
- एक दबाव समूह और एक राजनीतिक दल के बीच अंतर पहचानेंगे;
- विशेष रूप से भारत के संदर्भ में जनमत एवं दबाव समूहों का मूल्याकंन कर सकेंगे; तथा
- भारत में दबाव समूहों के महत्व को पहचानेंगे।

21.1 जनमत का अर्थ एवं उसकी विशेषताएँ

साधारणत: जनता या जनसामान्य के विचारों व उसकी अभिव्यक्ति को जनमत समझा जाता है, लेकिन जनता शब्द का अभिप्राय लोगों से नहीं है। किसी व्यक्ति विशेष को जनता नहीं कहा जा सकता। दूसरे शब्दों में कहें, तो समाज में कई प्रकार की जनता होती है। समान मत व विचारों वाले लोगों की कुल संख्या मिलकर भी किसी समरस जनता का निर्माण नहीं करती। जनता कुछ लोगों की कोई स्थायी सभा या समिति

नहीं है। जनता समाज के एक ऐसे वर्ग को कहते हैं, जिसके समान हित होते हैं। जनसाधारण से जुड़े मुद्दों पर इस वर्ग के विचार और मत एक से होते हैं।

इसलिए यह जरूरी नहीं है कि जनमत समाज के सभी लोगों का मत हो। यह बहुमत का भी मत नहीं है। समाज में कई प्रकार के लोग होते हैं, इसी कारण से उनके विचार व समस्याएँ भी अलग-अलग होती हैं। जनमत आवश्यक रूप से मत की विविधता को दर्शाता है।

यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि जनमत किसी व्यक्ति विशेष के विचारों से नहीं बनता, भले ही वह समाज का कोई सम्मानीय व्यक्ति ही क्यों न हो। जनमत कोई निजी मत नहीं होता। यह समाज के किसी प्रबुद्ध या विशेषज्ञ का मत भी नहीं होता, भले ही उसकी प्रबुद्धता लोकप्रिय हो। जनमत समाज के किसी एक वर्ग या कई वर्गों द्वारा उनसे जुड़े मुद्दों पर व्यवस्थित और ठीक ढंग से सोचे समझे विचार या दृष्टिकोण को कहते हैं। वास्तविक रूप से इसे ही जनता और उसके विचार कहते हैं। यह न तो कोई प्रचार पद्धति है और न ही जनसंपर्क का कोई तरीका।

जनमत की विशेषताएँ

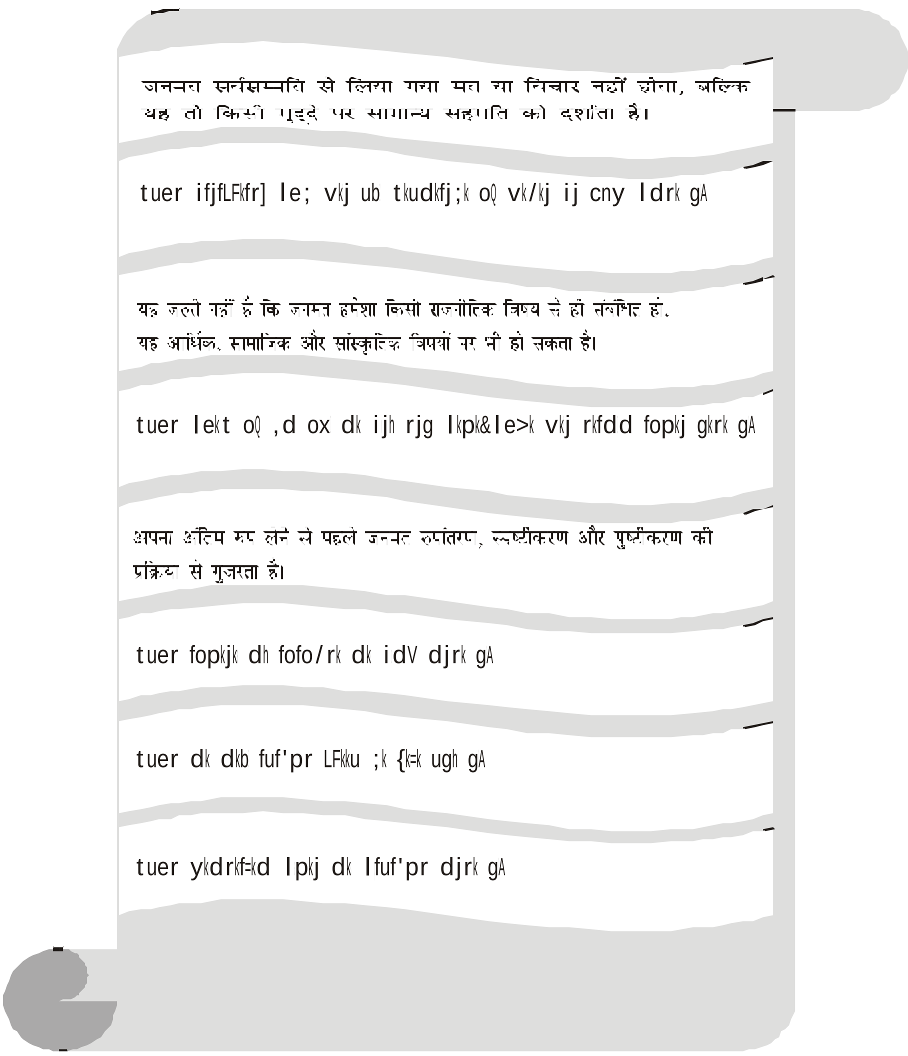

पाठगत प्रश्न 21.1

रिक्त स्थान भरिए

(क) जनता समाज का एक ऐसा वर्ग है, जो .... अधिकारों का प्रयोग करती है। (समान/विशेष)

(ख) जनमत समाज के किसी एक वर्ग या कई वर्गों द्वारा उनसे जुड़े मुद्दों पर ....विचार या दृष्टिकोण को कहते हैं। (व्यवस्थित और ठीक ढंग से सोचे-समझे/निजी और प्रबुद्ध)

(ग) जनमत सर्वसम्मति से लिया गया मत या विचार .... है। (होता/नहीं होता)

(घ) जनमत का कोई निश्चित स्थान या क्षेत्र ....। (नहीं है/है)

21.2 जनमत की भूमिका और महत्व

शासन प्रणाली में लोकतांत्रिक संचार को बनाए रखने के लिए जनमत को एक आवश्यक तत्व समझा जाता है। जनमत नागरिकों के विचारों की अभिव्यक्ति को कहते हैं। कोई भी सरकार इसकी उपेक्षा नहीं कर सकती। एक स्वस्थ एवं प्रभावशाली जनमत तानाशाही की भी कमर तोड़ सकता है। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली की शक्ति लोगों के विचारों के सम्मान पर ही आधारित है। सामूहिक समस्याओं के निदान के लिए स्वस्थ विचारों का आदान-प्रदान होना चाहिए। लोकतांत्रिक लक्ष्य को साकार करने के लिए जनमत की प्रासंगिकता से इनकार नहीं किया जा सकता। जनमत नागरिकों में जागरूकता लाता है और उन्हें उनसे जुड़े मुद्दों को विभिन्न दृष्टिकोणों से जाँचने-परखने का अवसर प्रदान करता है।

जनमत के महत्व और उसकी भूमिका की व्याख्या निम्नलिखित आधार पर की जा सकती है:

(d) सरकार का पथ-प्रदर्शक: नीतियों के निर्माण में जनमत सरकार के पथ-प्रदर्शक के रूप में कार्य करता है। सामान्य तौर पर सरकार उस जनादेश के आधार पर कार्य करती है, जो उसे चुनावों के दौरान मिले थे और उस समय लोगों से किए गए वादों को पूरा करके वह उन्हें जीतने का प्रयास करती है।

([k) कानून निर्माण में सहायक: जनमत हमेशा सरकार पर दबाव बनाए रखता है, इसलिए सरकार द्वारा जनहित में कानून बनाते समय इसे विशेष महत्व दिया जाता है। बहुत से मुद्दों पर सरकारी नीतियां निरपवाद रूप से जनमत द्वारा प्रभावित होती हैं। मौजूदा स्थिति में कैसे कानून बनाए जाएं, इस पर भी जनमत सरकार की सहायता करता है।

(X) प्रहरी के रूप में कार्य: जनमत एक प्रहरी के रूप में कार्य करता है। यह सरकार पर नियंत्रण बनाए रखता है और उसे अनुत्तरदायी होने से रोकता है। सरकार की गलत नीतियों की आलोचना करके जनमत उसे हर समय सतर्क बनाए रखता है। सरकार भी इस बात का हमेशा ध्यान रखती है कि अगर वह जनता की इच्छाओं के विपरीत गई, तो जनता उसे अपना वोट नहीं देगी और उसे सत्ता से हटा देगी।

(?k) अधिकारों व स्वतंत्रता का रक्षक: जनमत नागरिकों के अधिकारों व उसकी स्वतंत्रता के रक्षक के रूप में कार्य करता है। एक लोकतांत्रिक देश के नागरिकों को यह अधिकार होता है कि वह सरकार के कार्यों की अपनी इच्छा से या तो सराहना करे या आलोचना। इस अधिकार का प्रभावशाली व सकारात्मक प्रयोग न केवल सरकार को प्रोत्साहित करता है, बल्कि उसे लोगों के अधिकारों व स्वतंत्रता के प्रति जागरूक भी बनाए रखता है।

(Ä) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में: - विश्व स्तर पर जनमत का महत्व बहुत बढ़ गया है। वास्तव में अंतर्राष्ट्रीय संबंध भी जनमत से प्रभावित होने लगे हैं। भूमंडलीकरण के इस दौर में मानव अधिकारों के प्रति जागरूकता और उनकी सुरक्षा, पर्यावरण संबंधी बातें, नस्ल-धर्म और लिंग के आधार पर भेदभाव, बाल मजदूरी की रोकथाम, आतंकवाद आदि मुद्दों पर अंतर्राष्ट्रीय समुदाय आज जनमत के प्रति उत्तरदायी हो गया है। इस कारण से सरकार अब अंतर्राष्ट्रीय जनमत के प्रति भी सतर्क हो गई है। दरअसल कोई भी लोकतांत्रिक सरकार जनमत की अवहेलना नहीं कर सकती।

पाठगत प्रश्न 21.2

I. रिक्त स्थान भरिए

(क) नीति निर्धारण एवं कानून निर्माण के संदर्भ में सरकार .... को बहुत महत्व देती है। (जनमत/राजनीतिक दलों के विचार)

(ख) जनमत सरकार के प्रति एक .... के रूप में कार्य करता है। (प्रहरी/मित्र)

(ग) सरकारें आज अंतर्राष्ट्रीय जनमत के प्रति सतर्क ....। (हैं/नहीं हैं)

II. सत्य व असत्य चुनिए :

(क) सरकार आसानी से जनमत की अवहेलना कर सकती है। (सत्य /असत्य)

(ख) जनमत सरकार को मनमाने कार्य करने से रोकता है। (सत्य/असत्य)

(ग) अधिकारों और स्वतंत्रता की सुरक्षा करने में जनमत का कोई प्रभाव नहीं होता। (सत्य/असत्य)

(घ) अंतर्राष्ट्रीय संबंध जनमत द्वारा प्रभावित होते हैं। (सत्य/असत्य)

21.3 जनमत का निर्माण

जनमत के निर्माण की कोई निश्चित या स्वचालित प्रक्रिया नहीं होती। जब भी जनसामान्य से जुड़ा कोई मुद्दा उठता है, तो समाज के विभिन्न वर्ग अपना-अपना मत व्यक्त करते हैं। ऐसी स्थिति में कुछ मतों पर लोगों का विशेष ध्यान जाता है और वे जनमत के रूप में उभरते हैं। ऐसी बहुत-सी औपचारिक और अनौपचारिक प्रक्रियाएँ होती हैं, जो जनमत का निर्धारण कर उसे स्वरूप प्रदान करती हैं।

23.3.1 राजनीतिक सामाजीकरण

राजनीतिक सामाजीकरण एक ऐसी मूल प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति राजनीतिक मुद्दों के प्रति सजग हो जाता है। प्रत्येक मनुष्य परिवार, पड़ोस और विभिन्न क्षेत्रों में पलता व बढ़ता है। राजनीतिक शासन प्रणाली के प्रति व्यवहार, मान्यताओं और मूल्यों का निर्धारण इनके समूहों में ही होता है। व्यक्तित्व के निर्माण और चारित्रिक विकास में सबसे ज्यादा प्रभाव परिवार और मित्र समूह का होता है। ये समूह ही किसी व्यक्ति के निजी विचार और दृष्टिकोण को आकार प्रदान करने में आधारभूत भूमिका निभाते हैं। इस प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्ति विशेष के राजनीतिक मुद्दों के प्रति विचार और प्रतिक्रियाएँ निश्चित होती हैं।

21.3.2 प्रेस

समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, पैम्फलेट, इश्तेहार आदि को प्रिंट मीडिया की श्रेणी में रखा जाता है। प्रेस और प्रिंट मीडिया संसार में घटने वाले राजनीतिक एवं सामाजिक घटनाक्रमों से हमें अवगत कराते हैं। ये सम-सामयिक मुद्दों पर प्रकाश डालते हैं। वास्तव में प्रेस एक ऐसे पहरेदार के रूप में काम करता है, जो जनता की आवाज को सरकार तक पहुँचाता है। प्रेस के माध्यम से जनता अपने लेखों व टिप्पणियों से सरकार के कार्यों की आलोचना व सराहना करती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रेस सरकार को जनता के प्रति उत्तरदायी और जिम्मेदार बनाता है। इसके अलावा सरकार स्वयं अपनी नीतियों और कार्यक्रमों का प्रेस के माध्यम से प्रचार करती है। यह अपनी उपलब्धियों को गिनवाकर जनमत को अपने पक्ष में करने का प्रयास करती है।

21.3.3 रेडियो और टेलीविज़न

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जैसे रेडियो और टेलिविजन सामाजिक जीवन के प्रतिबिंब के रूप में कार्य करते हैं। प्रिंट मीडिया समाज के केवल शिक्षित वर्ग को ही प्रभावित कर पाती है, लेकिन इलेक्ट्रॉनिक मीडिया समाज के अशिक्षित वर्ग के विषय में जानकारी एकत्र करने और उनके विचारों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दृश्य-श्रव्य (Audio-visual) मीडिया का प्रयोग एक ऐसे सशक्त माध्यम के रूप में किया जाता है, जो हर प्रकार की सामाजिक बुराइयों से मुक्त सामाजिक रूपांतरण और नई सामाजिक व्यवस्थाओं का मार्गदर्शन करती है। यह लोगों को जातिवाद, सांप्रदायिक हिंसा जैसे मुद्दों पर शिक्षित भी करती है। रेडियो और टेलिविज़न के माध्यम से लोग सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों के प्रति अपनी भावनाओं और विचारों का आदान प्रदान करते हैं।

21.3.4 सिनेमा

सिनेमा मनोरंजन और जागरूकता लाने के लिए एक पारंपरिक माध्यम रहा है। सिनेमा लोगों की कलात्मक अभिरुचियों और बौद्धिक आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह सामाजिक व राजनीतिक समस्याओं पर नए विचारों और प्रतिमानों का ध्यान रखता है। फीचर फिल्मों और डॉक्यूमेंट्री फिल्मों का लोगों की मानसिकता पर स्वाभाविक प्रभाव पड़ता है। दृश्य -श्रव्य (Audio-visual) प्रक्रिया अशिक्षितों को भी प्रभावित कर सकती है।

21.3.5 सार्वजनिक सभाएँ

विभिन्न प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक और राजनीतिक क्रियाकलापों के लिए जनमत को आकार प्रदान करने में सार्वजनिक सभाएँ या मंच प्रभावशाली भूमिका निभाते है। ये लोककल्याण के मुद्दों

को ध्यान में रखकर बड़ी संख्या में लोगों को भाषणों, सेमिनारों, विचार गोष्ठियों, कार्यशालाओं और सम्मेलनों के माध्यम से एकत्रित करती हैं। ये लोगों के साथ निजी व भावनात्मक संबंधों को स्थापित करने का प्रयास करती हैं और उन्हें सकारात्मक और स्वस्थ कदम उठाने के लिए प्रेरित करती हैं।

21.3.6 राजनीतिक दल और उनके क्रियाकलाप

राजनीतिक दल जनमत का निर्माण और उसे संगठित करते हैं। इन्हें जनमत को लामबन्द करने वाला कहा जाता है। राजनीतिक दल लोगों को सार्वजनकि मुद्दों से केवल अवगत ही नहीं कराते हैं, बल्कि उनका मुख्य उद्देश्य लोगों को राजनीतिक रूप से सतर्क करना होता है, ताकि लोग सार्वजनिक समस्याओं के विषय में सोच सकें। राजनीतिक दल जनमत को अपने पक्ष में करने के लिए पत्रिकाएँ, पैम्फलेट, इश्तेहार, घोषणापत्र आदि छापते हैं।

21.3.7 जनमत सर्वेक्षण

जनमत सर्वेक्षण समय का रुझान (झुकाव) दिखाता है। यह विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक विषयों पर जनता के व्यवहार और उनके विचारों के संदर्भ में जानकारी एकत्र करने का एक प्रभावशाली तरीका है। सामान्यत: इनका संचालन व्यावसायिक संस्थाओं द्वारा किया जाता है, जो जनसंख्या के समुचित प्रतिनिधित्व का ध्यान रखते हैं। हाल के वर्षों में जनमत को समझने और उसका मूल्यांकन करने में जनमत सर्वेक्षण एक बहुत उपयोगी और लोकप्रिय माध्यम बन गया है।

बहुत-से अवसरों पर मतगणना का यह तरीका स्थिति की ठीक ढंग से जाँच करने में सफल नहीं हो पाया है और इसी कारण से इसके परिणाम और भविष्यवाणियाँ गलत साबित हुई हैं। लेकिन निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि जनमत पर इनका प्रभाव उल्लेखनीय है।

21.3.8 शिक्षण संस्थान

शिक्षण संस्थानों में स्कूलों, कॉलेजों, साहित्यिक मंडलों, अध्ययन समूहों, विश्वविद्यालयों और पुस्तकालयों को शामिल किया जाता है। ये जनमत को एक बड़ी सीमा तक प्रभावित कर सकते हैं। किशोर जनसंख्या दूसरे के विचारों से जल्दी ही प्रभावित हो जाती है, इसलिए इस आयु के किशोरों के लिए सही प्रकार के प्रशिक्षण की बहुत आवश्यकता होती है। प्रसिद्ध नेतागण, बुद्धिजीवी और शिक्षाविद्, उनकी नेतृत्व क्षमता को आकार प्रदान करने में सहायता करते हैं और वाद-विवाद, विचार-विमर्श, सेमिनार आदि के माध्यम से जनमत का निर्माण करने में सहायक होते हैं। पाठ्यक्रम के साथ-साथ अनेक गतिविधियाँ, जैसे नाटक विचार गोष्ठियाँ, पेंटिग/स्लोगन राइटिंग प्रतियोगिताएँ आदि भी छात्रों को महत्वपूर्ण राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर संवेदनशील बनाने में प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं।

लेकिन जनमत के प्रयोग की भी कुछ सीमाएँ हैं। ऐसा माना जाता है कि जनता स्थानीय और राष्ट्रीय मामलों में रुचि लेती है। जनता मोटे तौर पर ठीक-ठाक जानकारी रखती है। इसी कारण से वह बुद्धि व तर्क के आधार पर सोचती है और एक तर्कसंगत निर्णय लेती है।

जनता का मत चुनावों के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। जनमत सरकार को अपने आदेशों का पालन करने के लिए हमेशा बाध्य रखता है और सरकार भी सतर्क होकर ऐसे कानूनों का निर्माण करती है, जो उन सामाजिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित होते हैं, जिन्हें जनमत द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है।

जनमत में विचारों की विविधता एवं बहुलता को देखा जा सकता है। कभी-कभी इसे बहुत ही अनौपचारिक रूप से लिया जाता है। ऐसे में यह व्याख्या का विषय बन जाता है। गलती अब विचार या मत में नहीं होती, बल्कि उसकी व्याख्या में हो जाती है। ऐसे समय में ऐसा भी हो सकता है कि नमूने ही विश्वसनीय न हों। आधुनिक आम समाजों में लोग बहुत ज्यादा पढ़ते, सुनते और देखते हैं, तो ऐसे में उनके लिए असत्य तथ्यों में वास्तविकता को जाँचना सरल नहीं रह जाता। इस कारण से यह लोगों के सामने ऐसी चुनौती प्रस्तुत करता है कि वे समाचारों और विचारों में ठीक ढंग से अंतर करना सीखें। इन सब बातों के पश्चात भी इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि जनमत ही सरकार और नागरिकों के बीच संचार का सबसे प्रभावशाली साधन है।

पाठगत प्रश्न 21.3

I. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाएं –

(क) घर और परिवार ऐसी अनौपचारिक एजेंसियाँ हैं, जो जनमत को प्रभावित करती हैं। (सत्य/असत्य)

(ख) जनमत विचारों की विविधता को नहीं दर्शाता। (सत्य/असत्य)

(ग) किशोर जनसंख्या दूसरे के विचारों से प्रभावित नहीं होती। (सत्य/असत्य)

(घ) मतगणना सरकार के प्रति जनता की संतुष्टि को जाँचने वाला एक बैरोमीटर है। (सत्य/असत्य)

(ङ) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सामाजिक जीवन के प्रतिबिंब के रूप में कार्य करती है। (सत्य/असत्य)

(च) जनता स्थायी और राष्ट्रीय मामलों में कोई रुचि नहीं लेती। (सत्य/असत्य)

II. रिक्त स्थान भरिए –

(क) टेलीविज़न और रेडियो .... जनता के विचारों को भी निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। (शिक्षित/अशिक्षित)

(ख) सिनेमा और डॉक्यूमेंट्री फिल्मों का लोगों की मानसिकता पर .... प्रभाव पड़ता है। (स्वाभाविक और अस्वाभिक)

(ग) सार्वजनिक सभाएँ वक्ता और .... के बीच निजी संपर्क स्थापित करती हैं। (श्रोता/दर्शक)

21.4 स्वस्थ्य जनमत निर्माण में आने वाली बाधाएं

जनमत तब तक लोगों के मतों और विचारों का सही प्रतिबिंब नहीं कहलाएगा, जब तक निम्नलिखित बाधाओं का उन्मूलन नहीं किया जाएगा:

(d) उदासीन रवैया: आमतौर पर लोग अपने आपको राजनीतिक गतिविधियों से दूर रखना पसंद करते हैं। वे सार्वजनिक मामलों में रुचि नहीं लेते। उनका मानना होता है कि राजनीतिक निर्णयों के निर्माण में उनकी भागीदारी की आवश्यकता नहीं होती है। उनके इस उदासीन रवैये को बदलने और राजनीतिक निर्णयों के निर्माण में भागीदार बनने की आवश्यकता है। लोगों को उनके अपने देश में होने वाली इस प्रकार की राजनीतिक गतिविधियों में रुचि लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें राष्ट्र की एकता, अखंडता और उसके विकास से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए।

([k) निरक्षरता: समाज के शिक्षित व प्रबुद्ध लोगों से यह आशा की जाती है कि वे अच्छे मतदाता और नागरिक होंगे। वहीं दूसरी ओर अशिक्षित लोगों का ज्ञान सीमित होता है और वे राजनीतिक समस्याओं को नहीं समझ पाते। वे एक बुद्धिमत्तापूर्ण और तर्कसंगत मत का निर्माण करने में समर्थ नहीं होते, और वे आवेश और भावनाओं से प्रभावित हो जाते हैं। निरक्षरता के कारण पैदा होने वाला अज्ञान सामाजिक जीवन के लिए अभिशाप है। एक स्वस्थ जनमत का निर्माण केवल ज्ञान और शिक्षा के वातावरण में ही किया जा सकता है।

(X) निर्धनता: निर्धन लोग राजनीति से परे रहते हैं। सार्वजनिक मामलों पर ध्यान देने के लिए उनके पास समय ही नहीं होता। वे राजनेताओं की बड़ी-बड़ी बातों में आसानी से आ जाते हैं और बिना सोचे-समझे अपना वोट दे देते हैं तथा कई बार अपने वोटों को बेच भी देते हैं। इस प्रकार के मामलों को ध्यान में रखकर सरकार, गैर सरकारी संगठनों और दबाव समूहों को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। निर्धन और धनी के बीच के अंतर को कम किया जाना चाहिए तथा संपत्ति के बंटवारे को भी न्यायोचित रूप से

टिप्पणी

किया जाना चाहिए। निर्धनता को कम करके ही एक स्वस्थ जनमत का निर्माण संभव हो सकता है।

(?k) विभिन्न जातियों व संप्रदायों के बीच असंतुलन: लोकतंत्र में लोगों और राजनीतिक दलों को जात-पात व संप्रदाय की भावनाओं से ऊपर उठना चाहिए। उन्हें अपने आपको धर्म व संप्रदाय की संकीर्ण दीवारों के बीच नहीं बाँटना चाहिए। धर्म व राजनीति को अलग रखना चाहिए। देश के अंदर सामाजिक सामंजस्य स्वस्थ जनमत के निर्माण के लिए एक मंच की आधारशिला रख सकता है।

(Ä) स्वतंत्र प्रेस: पूर्वाग्रहों से मुक्त, विषयनिष्ठ, स्वतंत्र प्रेस तथा हर प्रकार के भय से मुक्त मीडिया एक स्वस्थ जनमत की आधारशिला रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रेस पर धार्मिक, पूंजीवादी या क्षेत्रीय हित हावी नहीं होने चाहिए। स्वतंत्र प्रेस को निष्पक्ष एवं विश्वसनीय ब्यौरा प्रस्तुत करना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 21.4

रिक्त स्थान भरिए

(क) एक स्वस्थ जनमत के निर्माण के लिए प्रेस को .... और .... होना चाहिए।
(पक्षपाती निष्पक्ष, स्वतंत्र निष्पक्ष)

(ख) लोकतंत्र में लोगों व राजनीतिक दलों को .... व .... जैसी भावनाओं से ऊपर उठना चाहिए। (जाति संप्रदाय, धर्मनिरपेक्षता/देशभक्ति)

(ग) स्वस्थ जनमत का निर्माण आर्थिक रूप से .... समाज में होता है। (संतुलित/असंतुलित)

21.5 दबाव समूह

आप यह पढ़ चुके हैं कि जनमत किस प्रकार से सरकार की नीतियों को प्रभावित करने में सहायक होता है। राजनीतिक दलों के अतिरिक्त समाज में कुछ ऐसे स्वयंसेवी समूह भी होते हैं जो जनता के विशेष हितों की समाज में रक्षा करते हैं। दबाव व हित समूह पूरी तरह से संगठित समूह होते हैं जिनके सार्वजनिक व सामाजिक हित होते हैं तथा ये समूह सरकार की नीति निर्धारक प्रक्रिया को बाहरी दबाव डालकर प्रभावित करते हैं। दबाव समूहों की सदस्यता स्वैच्छिक होती है और ये प्रत्येक देश में पाए जाते हैं।

इन दबाव समूहों के कार्य बहुत ही सीमित व संकीर्ण होते हैं। इनका चरित्र बहुत ही अनौपचारिक, संकीर्ण और गैर मान्यता प्राप्त होता है। ये दबाव समूह राजनीतिक दलों के विपरीत चुनावों में भाग नहीं लेते। ये अनेक तकनीकों के माध्यम से सरकार पर दबाव डालते हैं, इसी कारण से इन्हें दबाव समूह कहा जाता है। इन सबके बावजूद भी ये देश की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं और जनमत को लामबंद करने में सहायक होते हैं।

विभिन्न प्रकार की दलीय प्रणालियाँ, विभिन्न प्रकार की दबाव गतिविधियों को जन्म देती हैं। विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों में दबाव समूहों में कार्य करने की प्रक्रिया अलग-अलग होती है। इन्हें निम्नलिखित पाँच घटकों द्वारा नियंत्रित किया जाता है:

1. राजनीतिक संस्थानों का ढाँचा
2. दलीय प्रणाली की प्रकृति
3. राजनीतिक संस्कृति तथा लोगों व नेताओं का व्यवहार
4. सामने आने वाली समस्याओं और मामलों की प्रकृति
5. संबद्ध हित समूहों का चरित्र एवं प्रकार

पाठगत प्रश्न 21.5

रिक्त स्थान भरिए

(क) दबाव समूहों को दबाव समूह इसलिए कहा जाता है, क्योंकि वे सरकार पर .... डालते हैं। (दबाव/आलोचना)

(ख) दबाव समूह .... से अलग प्रकृति के होते हैं क्योंकि ये चुनावों में भाग नहीं लेते। (राजनीतिक दलों/गैर सरकारी समूहों)

(ग) दबाव समूह .... को लामबंद करने में सहायता करते हैं। (जनमत/राजनीतिक दल)

(घ) दबाव समूहों के कार्य करने का तरीका राजनीतिक प्रणाली .... होता है। (से अलग/के समान)

(ङ) राजनीतिक संस्कृति तथा नेताओं व लोगों का व्यवहार दबाव समूहों की कार्यपद्धति को प्रभावित .... है। (करता/नहीं करता)

21.6 भारत में दबाव समूहों का वर्गीकरण

जैसा कि आप पढ़ चुके हैं कि संसार के सभी देशों में दबाव समूह होते हैं, भारत इसमें अपवाद नहीं है ये अपने हितों की पूर्ति के लिए सरकार द्वारा लिए जाने वाले निर्णयों को प्रभावित करते हैं। इनके उद्देश्यों और लक्ष्यों के आधार पर इन्हें मुख्य रूप से चार वर्गों में विभाजित किया गया है, जो निम्न हैं:

व्यावसायिक दबाव समूह	**सामाजिक-सांस्कृतिक दबाव समूह**
संस्थागत दबाव समूह	**तदर्थ दबाव समूह**

(d) व्यावसायिक दबाव समूह: - इस वर्ग में उन दबाव समूहों को शामिल किया जाता है, जिनका निर्माण किसी निश्चित पेशे या व्यवसाय के कर्मचारियों द्वारा अपने हितों की रक्षा के लिए किया जाता है। ऐसे बड़े व्यावसायिक घराने, जिनके पास संसाधनों की प्रचुरता होती है तथा जिनके पास तकनीकी व प्रबंधन के क्षेत्र के कर्मचारियों की उपलब्धता होती है तथा जिनके सरकार के संभ्रांत वर्गों, मीडिया, प्रशासन और विपक्षी दलों से अच्छी जान पहचान व संबंध होते हैं, उनके नियंत्रण में सबसे संगठित व शक्तिशाली दबाव समूह होते हैं।

Federation of Indian Chambers of Commerce and Industry

अनेक व्यावसायिक घरानों का प्रभाव भारतीय संसद तथा विधानमंडल में है। उनके पास ऐसे प्रतिनिधि व जनसंपर्क अधिकारी हैं, जो प्रशासन व उच्च नौकरशाही से संपर्क बनाए रखते हैं। फिक्की निजी पूंजी के

क्षेत्र में सबसे बड़ा तथा प्रभावशाली संगठन है। यह लगभग 40,000 प्रतिष्ठानों का प्रतिनिधित्व करता है। इसके साथ एक बड़ा व्यापारिक कॉरपोरेट जगत है। राजनीतिक दल निधि इत्यादि प्राप्त करने के लिए इस पर आश्रित हैं। इसके बदले में ये राजनीतिक दल इन्हें कारोबार शुल्क (टैरिफ), पूंजी निवेश, कर आदि में छूट देते हैं। आज के भूमंडलीकरण व उदारवाद के दौर में फिक्की की भूमिका बहुत बढ़ गई है। विशेषकर आर्थिक व वाणिज्यिक नीतियों से संबंधित मुद्दों पर सरकार इस समूह के विचार सुनती है व इसकी सलाह लेती है।

कुछ अन्य व्यावसायिक समूह हैं: एसोसिएटेड चैंबर ऑफ कॉमर्स, कनफेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्रीज, टाटा ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज, टाटा, बिरला, डीसीएम, डाल्मिया और हिंदुस्तान लीवर आदि। ये सभी सरकार की औद्योगिक नीतियों व कानूनों को प्रभावित करते हैं।

पेशेवर दबाव समूहों में ट्रेड यूनियनों, किसान संगठनों, अध्यापक व छात्र संगठनों तथा कुछ अन्य संगठनों जैसे अखिल भारतीय चिकित्सा परिषद्, अखिल भारतीय डाक एवं मजदूर संघ आदि को शामिल किया जाता है। इस प्रकार पिछले कुछ वर्षों में व्यावसायिक घरानों का प्रभाव देश की वित्तीय औद्योगिक और वाणिज्यिक राजनीति पर काफी बढ़ा है।

ट्रेड यूनियनों और किसान संगठनों का इतिहास हमें स्वतंत्रता के दौर से पहले ले जाता है। श्रमिक वर्ग के सामाजिक राजनीतिक हितों का समर्थन करने के उद्देश्य से सन् 1920 में ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना की गई। हिंद मजदूर संघ, सेंटर ऑफ इंडिया ट्रेड यूनियन (CITU), इस प्रकार की ट्रेड यूनियनों के कुछ उदाहरण हैं। देश के अलग-अलग भागों में बिजली, पानी, बैंक, इंश्योरेंस आदि से संबंधित ट्रेड यूनियनें किसी न किसी प्रकार से अखिल भारतीय संगठन से संबद्ध हैं।

ऐसा देखा गया है कि राजनीतिक दल अपने हितों की पूर्ति के लिए किसानों व काश्तकारों का इस्तेमाल करते हैं। ऐसे समय में उन्हें एकजुट होकर अपने अधिकारों की माँग करनी चाहिए। वे सभी कृषि के क्षेत्र में अपने हितों की सुरक्षा चाहते हैं, जिनके लिए हर संभव प्रयास किए जाने चाहिए। उनके मुख्य उद्देश्यों में पैदावार के लिए उच्च मूल्य, उर्वरकों के लिए सब्सिडी, ऋण एवं खाद की उपलब्धता आदि है। हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पंजाब, कर्नाटक, राजस्थान आदि में प्रभावशाली किसान संगठन, जैसे भारतीय किसान यूनियन, सरकार द्वारा कृषि के संबंध में लिए जाने वाले निर्णयों को प्रभावित करती है। इस प्रकार के संगठन राष्ट्रीय जागरूकता तथा वर्ग चेतना को भी एक सुनिश्चित आकार प्रदान करते हैं। इनके पास समाज के उपेक्षित व निर्धन वर्ग की बेहतरी के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति तथा एकात्मकता होती है, किन्तु पूंजी की ताकत नहीं होती।

शिक्षा के क्षेत्र में भी छात्रों, अध्यापकों, गैर व्यावसायिक कर्मचारी वर्ग (स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालय आदि) की अपनी यूनियनें हैं, जिनके द्वारा वे जनमत को लामबंद करते हैं तथा अपने अधिकारों, जैसे पी.एफ, ग्रेज्युटी, बोनस, एलटीसी, छुट्टियों और व्यावसायिक संस्थानों को खोलने, परिवहन की समुचित सुविधाओं, फीस संरचना आदि की सुरक्षा के लिए सरकार पर प्रभाव डालते हैं। इस प्रकार के कुछ संगठन हैं: नेशनल स्टूडेंट यूनियन ऑफ इंडिया, भारतीय जनता युवा मोर्चा, ऑल इंडिया टीचर्स एसोसिएशन, ऑल इंडिया स्टूडेंट यूनियन, दिल्ली यूनिवर्सिटी स्टूडेंट यूनियन आदि।

([k) सामाजिक सांस्कृतिक दबाव समूह: ऐसे बहुत-से सामाजिक सांस्कृतिक दबाव समूह हैं, जो सामुदायिक सेवाओं से सरोकार रखते हैं तथा संपूर्ण समुदाय के हितों को बढ़ावा देने के लिए कार्य करते हैं। इनके अलावा कुछ और दबाव समूह भी हैं, जो अपनी भाषा और अपने धर्म के प्रचार के लिए कार्य करते हैं। ऐसे कुछ दबाव समूह निम्न हैं: आर्य प्रतिनिधि सभा, जनसेवा संघ, रामकृष्ण मिशन, आर्य समाज, जमात-ए-इस्लामी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्वहिन्दू परिषद्, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, पारसी अन्जुमन, यंग मैन ईसाई संगठन, बजरंग दल, संस्कृत साहित्य अकादमी, पंजाबी अकादमी, मराठी संघ, भारतीय आदिम जाति संघ, शरणार्थी लोक समिति आदि।

(X) संस्थागत दबाव समूह: ऐसे भी कई दबाव समूह हैं, जो सरकारी ढाँचे के भीतर ही काम कर रहे हैं। बिना राजनीतिक पद्धति में शामिल हुए ये दबाव समूह सरकार की नीतियों को अपने हितों के लिए प्रभावित करते हैं। सिविल सर्विस एसोसिएशन, पुलिस वेलफेयर संगठन, गजेटिड ऑफिसर यूनियन, डिफेंस पर्सोनल एसोसिएशन, आर्मी ऑफिसर्स संगठन, रेड क्रॉस सोसाइटी आदि कुछ इसी प्रकार के दबाव समूहों के उदाहरण हैं। इन दबाव समूहों के द्वारा स्थानांतरण, अवकाश नियमों मुद्रास्फीति के कारण पर्याप्त महंगाई भत्ता का निर्धारण आदि जैसे मामलों में इनके द्वारा दबाव बनाया जाता है। हालांकि इनके कार्य सार्वजनिक होते हैं, लेकिन फिर भी ये सरकारी तंत्र के भीतर रहकर ही सक्रिय बने रहते हैं।

(?k) तदर्थ दबाव समूह: कुछ दबाव समूह किसी विशेष मुद्दे को लेकर सरकार पर दबाव बनाने के उद्देश्य से बहुत थोड़े समय के लिए अस्तित्व में आते हैं। अपने उद्देश्य की पूर्ति करने के बाद ये समाप्त हो जाते हैं। प्राकृतिक आपदाओं की विषम स्थिति में ये दबाव समूह अपने हित में सरकार की नीतियों को प्रभावित करने के लिए दबाव डालते हैं। इस प्रकार के दबाव समूह हैं- उड़ीसा रिलीफ आर्गनाइजेशन, भूदान अनुयोजना, कावेरी वाटर डिस्ट्रीब्यूशन एसोसिएशन, गुजरात रिलीफ आर्गनाइजेशन आदि।

21.7 दबाव समूहों की भूमिका

दबाव समूहों की गतिविधियां 'लॉबी' नाम से प्रचलित हैं। 'लॉबी' एक अमरीकी शब्द है, लेकिन आज इसका प्रयोग न केवल यूरोपीय लोकतंत्रों में किया जाता है, बल्कि जापान सहित विश्व के अन्य बहुत से देशों में किया जाता है। यह सदन के भीतर लॉबी की ओर इंगित करता है, जहाँ संसद सदस्य और विधायक सदन से संबंधित कार्रवाइयों पर चर्चा करते हैं।

भारतीय राजनीतिक प्रणाली में दबाव समूह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये जनता और राजनीतिक दलों के बीच एक कड़ी के रूप में तथा संचार के एक साधन के रूप में कार्य करते हैं। ये लोगों को बहुत से सामाजिक आर्थिक मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाते हैं तथा उन्हें राजनीतिक रूप से शिक्षित भी करते हैं। ये बहुत ही प्रभावशाली नेतृत्व का निर्माण करते हैं तथा भविष्य के नेताओं को एक प्रशिक्षण मंच मुहैया कराते हैं। ये समाज के बहुत-से परंपरागत मूल्यों के बीच के अंतर को कम करने का प्रयास भी करते हैं। एकता और अखंडता की स्थापना ही दबाव समूहों के कार्यों का मुख्य परिणाम है। इस प्रकार से यह बात एकदम स्पष्ट है कि दबाव समूह सरकार व प्रशासन दोनों की नीतियों को प्रभावित करते हैं। आप उन दबाव समूहों के बारे में पहले ही पढ़ चुके हैं, जो भारत में कार्य करते हैं।

किसी देश के राजनीतिक संस्थान दबाव समूहों के कार्य और उनके मुख्य उद्देश्यों को सुनिश्चित करते हैं। इंगलैण्ड, अमेरिका, फ्रांस और अन्य लोकतांत्रिक देशों में दबाव समूहों के पास सरकार के निर्णयों को प्रभावित करने के और अधिक अवसर होते हैं। ब्रिटेन में जब से संसद सदस्यों की अपेक्षा कैबिनेट और सिविल सर्विसेस (लोक सेवा) अधिक प्रभावशाली हुई है, तब से पहले के मुकाबले दूसरे तक पहुँच बनाना उपयोगी हो गया है। हाउस ऑफ कामन्स की लॉबी की अपेक्षा व लोकसेवा के सदस्यों की लॉबी करना अधिक लाभकारी है। संयुक्त राज्य अमरीका में कांग्रेस संबंधी समिति प्रणाली और उसके प्रभावशाली चैयरमैन पर ध्यान केंद्रित करना लाभदायक होता है। संयुक्त राज्य अमरीका में चैंबर ऑफ कामर्स तथा निर्माता संगठनों को बहुत शक्तिशाली माना जाता है।

फ्रांस में हित समूह राष्ट्रीय असेम्बली के बजाए प्रशासन को अपना लक्ष्य बनाते हैं। यद्यपि अमरीका के बहुत-से दबाव समूह और लॉबियाँ राजनीतिक दलों से दूरस्थ संबंध रखती हैं परंतु शक्तिशाली ट्रेड यूनियन राजनीतिक दलों से निकट संबंध रखते हैं। जैसे- अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर, कांग्रेस ऑफ इंडस्ट्रियल आर्गनाइजेशन का डेमोक्रेटिक पार्टी के साथ, ब्रिटिश यूनियन का लेबर पार्टी के साथ, रोमन कैथोलिक चर्च का क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ जर्मनी एण्ड इटली के साथ।

पाठगत प्रश्न 21.6

रिक्त स्थान भरिए –

(क) दबाव समूह जनता को बहुत-से .... मुद्दों के प्रति संवेदशील बनाते हैं। (सार्वजनिक/निजी)

(ख) दबाव समूह .... और .... के बीच एक योजक के रूप में कार्य करते हैं। (सरकार, नागरिकों/सरकार, राजनीतिक दलों)

(ग) किसी भी देश के .... दबाव समूहों के कार्यों और उनके उद्देश्यों को सुनिश्चित करते हैं। (राजनीतिक संस्थान/ सामाजिक संस्थान)

21.8 दबाव समूहों की कार्यपद्धति

सरकारी अधिकारियों और नेताओं के साथ संबंध बनाए रखना दबाव समूहों का एकनिष्ठ प्रयास होता है। सरकारी प्रणाली को प्रभावित करने के लिए दबाव समूह बहुत-सी कार्यपद्धतियों का प्रयोग करते हैं। ये कार्यपद्धतियाँ देश की राजनीतिक प्रणाली की प्रकृति और समाज के प्रारूप पर आधारित होती हैं। अपनी मांगों की पूर्ति के लिए ये याचिका तथा निवेदन पत्रों का प्रयोग करते हैं। ये जनमत को हमेशा अपने पक्ष में रखने का प्रयास करते हैं। अपनी भावनाओं और विचारों को सरकार के सामने प्रकट करने के लिए ये दबाव समूह आमतौर पर इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया का प्रयोग करते हैं। बहुत-से प्रचार साधनों का प्रयोग करके ये दबाव समूह जनमत को आकार प्रदान करने तथा प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। लॉबी करके भी दबाव समूह सरकार पर दबाव बनाने का प्रयास करते हैं। एक सीमा तक तो दबाव समूहों के पास न्यायपालिका को प्रभावित करने के भी अवसर होते हैं। वे न्यायाधीशों की चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं तथा न्यायिक निर्णयों को प्रभावित करने के लिए अभियान चलाते हैं। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि दबाव समूह प्रत्येक लोकतांत्रिक शासन प्रणाली के महत्वपूर्ण अंग बन गए हैं। ये लोकतांत्रिक भावना और राष्ट्रीय चरित्र को भी बनाए रखते हैं। अनावश्यक रणनीति और नौकरशाही को भ्रष्ट करने के लिए अपनाए गए दोहरे मापदंडों के कारण दबाव समूहों की आलोचना भी की जाती है। शक्तिशाली समूह किसी भी तरह अपनी मांगों की पूर्ति करने में सफल हो जाते हैं, जबकि कमजोर समूहों की कहीं कोई सुनवाई तक नहीं होती। कई बार तो ट्रेड यूनियनें तथा अन्य संगठन अपने प्रभावों के कारण अपनी अनावश्यक माँगों को भी पूरी करवा लेते हैं। वास्तव में दबाव समूहों का प्रभाव उनकी संगठनात्मक शक्ति, अनुशासन उसके सदस्यों की वचनबद्धधता लोगों की सहानुभूति और सहयोग इकट्ठा करने की क्षमता, आर्थिक स्थिति और निर्णय लेने वाली सभा तथा समितियों तक पहुँच पर निर्भर करता है।

राजनीतिक उद्देश्यों व लोगों के लिए कार्य करने वाले दबाव समूह कुछ उग्र उपायों का भी प्रयोग करते हैं, जैसे-रैलियाँ निकालना, धरने देना, प्रदर्शन करना और भूख हड़ताल करना आदि।

मानवीय उद्देश्यों जैसे शांति, पर्यावरण सुरक्षा, मानवाधिकार आदि की पूर्ति के लिए कार्य करते समय दबाव समूह एक प्रबुद्ध जनमत के निर्माण की कार्यपद्धति को अपनाते हैं और संवेदना तथा तार्किकता की भावना को उत्पन्न करते हैं। ये विशेष राष्ट्रीय अभियानों के आयोजन और अंतर्राष्ट्रीय एकता से संबंधित गतिविधियों के द्वारा अपना कार्य करते हैं। एड्स, आतंकवाद और परमाणु बम के खिलाफ छेड़े जाने वाले आंदोलन इसी प्रकार के अभियानों के कुछ उदाहरण है।

पाठगत प्रश्न 21.7

रिक्त स्थान भरिए

(क) राजनीतिक उद्देश्य हेतु कार्य करते समय दबाव समूह .... उपायों का प्रयोग सरकार पर दबाव बनाने के लिए करते हैं। (उदार/उग्र)

(ख) .... दबाव समूह अपनी माँगों को पूरा करवाने में सफल हो जाते हैं। (शक्तिशाली/कमजोर)

(ग) दबाव समूह विभिन्न .... कार्यपद्धतियों का प्रयोग करके जनमत को आकार प्रदान करने का प्रयास करते हैं। (प्रचार/गोपनीय)

आपने क्या सीखा

इस अध्याय में आपने भारत में जनमत और दबाव समूहों के विषय में पढ़ा। जनमत एक ऐसा सामाजिक उत्पाद है, जिसका निर्माण बहुत-से मतों की परस्पर क्रिया के बाद होता है। इसे जनता के व्यक्तिगत विचारों के संग्रह के रूप में परिभाषित किया जाता है। परिस्थितियों, समय और नई जानकारियों के आधार पर जनमत में परिवर्तन हो सकता है। शासन प्रणाली के अंदर लोकतांत्रिक संचार के द्वारा सही ढंग से कार्य करने के लिए जनमत को सबसे आवश्यक तत्व माना जाता है। बहुत-से मुद्दों पर सरकारी नीतियाँ जनमत द्वारा निरपवाद रूप से प्रभावित होती है। इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया, जनमत सर्वेक्षण, राजनीतिक सामाजीकरण, राजनीतिक दल आदि एजेंसियाँ जनमत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जनमत तब तक जनता के विचारों का एक सच्चा प्रतिबिंब नहीं बन सकेगा, जब तक कि उदासीन रवैये, निरक्षरता, निर्धनता, कपटी और पक्षपाती प्रेस जैसी बाधाओं को नहीं हटाया जाएगा।

आप पढ़ चुके हैं कि राजनीतिक दलों के विपरीत, ऐसे कुछ स्वैच्छिक संगठित समूह भी होते हैं, जो समाज में विशेष वैयक्ति हितों की रक्षा के लिए कार्य करते हैं। वे सरकार पर बहुत-सी तकनीकों के माध्यम से दबाव डालते हैं, इन्हें दबाव समूहों के नाम से जाना जाता है। दबाव समूहों की कार्यपद्धतियाँ एवं कार्यप्रणाली देश की दलीय प्रणाली के स्वरूप और प्रकृति पर निर्भर करती है। आपने अन्य देशों व भारत में फिक्की, ट्रेड यूनियनों आदि दबाव समूहों के बारे में पढ़ा है। सरकार द्वारा अपनी माँगों की पूर्ति कराने के लिए दबाव समूह लोकतांत्रिक और गैर लोकतांत्रिक कार्यपद्धियों को अपनाते हैं, फिर भी सरकार की नीतियों को निर्धारित करने में वे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. जनमत की परिभाषा दें।
2. भारत की लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में जनमत की भूमिका को जाँचे।
3. जनमत निर्माण की एजेंसियों का वर्णन करें।
4. एक स्वस्थ जनमत के निर्माण में आने वाली बाधाओं का विश्लेषण करें।
5. किस आधार पर हम भारत में दबाव समूहों का वर्गीकरण करते हैं?
6. दबाव समूहों की भूमिका पर चर्चा करें।
7. भारत में दबाव समूहों द्वारा अपनाई जाने वाली कार्यपद्धतियों का मूल्याकंन करें।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

21.1

(क) समान

(ख) व्यवस्थित और ठीक ढंग से सोचे-समझे

(ग) नहीं होता

(घ) नहीं है

21.2

I. (क) जनमत

(ख) प्रहरी

(ग) हैं

II. (क) असत्य

(ख) सत्य

(ग) असत्य

(घ) सत्य

21.3

I. (क) सत्य

(ख) असत्य

(ग) असत्य

(घ) सत्य

(ङ) सत्य

(च) असत्य

II. (क) अशिक्षित

(ख) स्वाभाविक

(ग) श्रोता

21.4

(क) निष्पक्ष और स्वतंत्र

(ख) जाति व संप्रदाय

(ग) संतुलित

21.5

(क) दबाव

(ख) राजनीतिक दलों

(ग) जनमत

(घ) से अलग

(ङ) करता

21.6

(क) सार्वजनिक

(ख) सरकार, नागरिकों

(ग) राजनीतिक संस्थान

21.7

(क) उग्र

(ख) शक्तिशाली

(ग) प्रचार

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. देखें खंड 21.1
2. देखें खंड 21.2
3. देखें खंड 21.3
4. देखें खंड 21.4
5. देखें खंड 21.6
6. देखें खंड 21.7
7. देखें खंड 21.8

किशोरों के मुद्दों पर आइए विचार करें

मित्र-समूह का अर्थ है लोगों का सेवा समूह जिसमें लगभग एक ही आयु-वर्ग, हैसियत और हित के लोग शामिल हों, मित्र दबाव समूह एक ऐसा शब्द है जिससे व्यक्ति में बदलाव या बदलाव की प्रवृत्ति, दृष्टिकोण, व्यवहार तथा नैतिकता प्रत्यक्ष रूप से अपने मित्र समूह से प्रभावित होते हैं।